## तर्कबुद्धिवाद : लाइबनिज (Rationalism: Leibnitz)

लाइबनिज बचपन में ही अपने पिताजी के साथ पुस्तकालय में जाकर समय व्यतीत करने लगे। वहीं से उनके अंदर दर्शन के प्रति रुचि जाग्रत् हुई। अपनी तीव्र बुद्धि के कारण वे कई विषयों के विद्वान हो गए। इस बात का प्रमाण यह है कि उन्हें 20 वर्ष की उम्र में डॉक्टरेट की उपाधि मिल गई थी। लाइबनिज ने विभिन्न मतों के मध्य समन्वय स्थापित करने को अपना लक्ष्य बनाया। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'चिदणुशस्त्र' है। डेकार्ट ने चित् और अचित् को दो परस्पर विरोधी द्रव्य माना। उनको दर्शन जगत में द्वैताद्वैतवादी दार्शनिक माना गया है।

## लाइबनिज का चिदणुवाद (Leibnitz's Monadology)

लाइबनिज बुद्धिवादी दार्शनिक है। बुद्धिवादी दर्शन की मूलभूत धारणाएँ उसके दर्शन में स्पष्टतः दिखती हैं। इसके अतिरिक्त न्यूटन के परमाणुवाद (Atomism) और रेखागणित के बिंदुवाद (Pointism) का प्रभाव उस पर पर्याप्त मात्रा में है। इन्हीं सब प्रभावों से उसका चिदणुवाद निखमत हुआ है।

## लाइबनिज का द्रव्य सिद्धांत की परिभाषा (Leibnitz's theory of Substance)

पश्चिमी दर्शन में, विशेषतः आधुनिक बुद्धिवाद में द्रव्य की व्याख्या करना सभी दार्शनिकों के लिये एक कठिन चुनौती रही है। प्लेटो, अरस्तू और उसके बाद डेकार्ट व स्पिनोजा ने यह प्रयास अपने–अपने तरीके से किया है। डेकार्ट ने माना कि द्रव्य वह है जो अपनी सत्ता व ज्ञान में स्वतंत्र है। इस आधार पर उसने चित् (Soul) और अचित् (Matter) को सापेक्ष द्रव्य (Relative Substances) और ईश्वर को निरपेक्ष द्रव्य (Absolute Substance) के रूप में स्थापित किया। स्पिनोजा ने द्रव्य की परिभाषा को यही रखा किन्तु डेकार्ट के दर्शन में निहित विसंगति को दूर किया। चूँकि इस परिभाषा के अनुसार द्रव्य को एक ही होना चाहिये, अतः स्पिनोजा ने द्रव्य के द्वैतवाद (Dualism) के स्थान पर एकतत्ववाद (Monism) को स्वीकार किया और चित् व अचित् की व्याख्या गुणों के द्वैतवाद (Dualism of attributes) के रूप में की। लाइबनिज ने द्रव्य सिद्धांत की परिभाषा बदल दी। उसके अनुसार, ''द्रव्य वह है जो

स्वतंत्र शक्तिसंपन्न है अर्थात् जिसमें क्रिया करने की शक्ति है, वही द्रव्य है।'' हीनयानी बौद्ध दर्शन में भी अर्थक्रियासामर्थ्य को ही सत् का लक्षण माना गया है। लाइबनिज के अनुसार, यह क्रियाशक्तिसामर्थ्य बहुत सारे विस्ताररहित (Non-extended) चेतन अणुओं में पाया जाता है जिन्हें चिदणु (Monads) कहते हैं। ये सभी चिदणु द्रव्य हैं। जड़ का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, वह चेतना की अल्पता का ही परिचायक है। इस प्रकार डेकार्ट का द्वैतवाद और स्पिनोजा का एकतत्ववाद लाइबनिज के दर्शन में अनेकतत्ववाद (Pluralism) बन गया।

## चिदणुओं (Monads) की विशेषताएँ

लाइबनिज ने संपूर्ण ब्रह्मांड की व्याख्या चिदणुओं के माध्यम से की है। चिदणुओं की विशेषताएँ हैं कि चिदणु निरवयव (Partless), सरल (Simple) तथा विस्ताररहित (Extensionless) हैं।